Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

उदयपुर के आधुनिकीकरण में पर्यटन की भूमिका : सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक विरासत के संदर्भ में एक अध्ययन

मोनिका चौधरी* डॉ. नरेंद्र सिंह राणावत**

* शोधार्थी, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत
** सहायक आचार्य (इतिहास) भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – मेवाड़ की राजधानी के रूप में विकसित उदयपुर शहर की स्थापना सन 1559 ईस्वी में महाराणा उदय सिंह द्वारा की गई थी यह स्थल जिलों राजमहलों पौराणिक मंदिरों राजा महाराजा की छतरियां जैसे अनेक सांस्कृतिक स्थलों से समृद्ध रहा है यही विरासत आगे चलकर पर्यटन का आधार स्तंभ बनी आज पर्यटन के कारण ही उदयपुर ने अपना नाम राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर स्थापित किया है परिणाम स्वरुप परिवहन आवास हस्तशिल्प बाजार सेवा तथा स्थानीय रोजगार के क्षेत्र को विस्तार मिला प्रस्तुत शोध पत्र में पर्यटन और आधुनिकीकरण के अंतर संबंध को सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विरासत के संदर्भ में विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है इस अध्ययन में उदयपुर की जेलों महलों उद्यानों सहित चावंड गोगुंदा कानोड़ बदला भिंडर तथा बथड बथड पाठक जैसे ऐतिहासिक स्थलों पर भी प्रकाश डाला गया है इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पर्यटन के कारण ही हमारी विरासत आर्थिक व सामाजिक उपयोगिता से जोड़ सखी इस ऐतिहासिक विरासत नहीं आज के उदयपुर को सांस्कृतिक पहचान दिलाई इसके साथ ही विरासत संरक्षण की अपेक्षा ए नियोजित पर्यटन तथा इसके व्यवसायीकरण की चुनौतियां भी सामने आई अत: उदयपुर के आधुनिकीकरण के लिए पर्यटन के विकास और ऐतिहासिक विरासतों के संरक्षण में संतुलन अत्यावश्यक है।

शब्द कुंजी – उदयपुर मेवाड़ आधुनिकीकरण पर्यटन ऐतिहासिक विरासत सांस्कृतिक विरासत।

प्रस्तावना – परिवर्तन समाज का अनिवार्य व शाश्वत तत्व है। यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसका प्रभाव सर्व व्याप्त है। आधुनिकीकरण केवल समाज में आधुनिक भवनों, सड़कों,तकनीकी सुविधाओं के विकास का नाम ही नहीं है बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में उदयपुर के आधुनिकीकरण में भारतीय पारंपरिक ज्ञान, स्थानीय तकनीक, जल संरक्षण, नगर नियोजन के साथ-साथ यहां की प्राकृतिक व सांस्कृतिक विरासत की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

उदयपुर का इतिहास मेवाड़ की राजनीतिक व सांस्कृतिक विरासत का एक अभिन्न अंग रहा है। यहां की झीलें,महल, दुर्ग, मंदिर,छतरियां आदि आज भी सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों के केंद्र बने हुए हैं। पर्यटन के कारण ही यह ऐतिहासिक स्थल उदयपुर की आधुनिक अर्थव्यवस्था से जुड़ सके। इसी के कारण उदयपुर, एक प्रमुख पर्यटन नगर के रूप में विकसित हुआ। पर्यटन की मूल अवधारणा प्राचीन भारत में तीर्थाटन, ज्ञानार्जन तथा देशाटन जैसी यात्राओं से जुड़ी हुई है। आधुनिक युग में इसका स्वरूप और भी अधिक विस्तृत हो गया तथा मनोरंजन के साथ-साथ सांस्कृतिक अनुभव, विरासत दर्शन तथा ऐतिहासिक अध्ययन भी इसके प्रमुख उद्देश्य बने। इस प्रकार यहां की ऐतिहासिक विरासत आधुनिक पर्यटन के लिए एक मजबूत आधार तैयार करती है।

इस शोध का उद्देश्य उदयपुर के आधुनिकीकरण में पर्यटन की भूमिका का ऐतिहासिक अध्ययन करना तथा इसका यहां की सांस्कृतिक व ऐतिहासिक विरासत के साथ-साथ संबंध को स्पष्ट करना है। यह शोध आर्थिक व सामाजिक गतिविधियों पर पर्यटन के प्रभाव तथा विरासत संरक्षण की चुनौतियां तथा संतुलित पर्यटन विकास की संभावनाओं को भी रेखांकित करता है। यह शोध मुख्यत: ऐतिहासिक व विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इस शोध के लिए उदयपुर राज्य एवं मेवाड़ के इतिहास से संबंधित प्रकाशित ग्रंथों,पर्यटन संबंधी साहित्य, ऐतिहासिक व सांस्कृतिक सामग्री का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन में प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोतों के आधार पर पर्यटन स्थलों के ऐतिहासिक महत्व को भी विश्लेषित किया गया है।

झीलों की नगरी, पूर्व का वेनिस, राजस्थान का कश्मीर जैसे उपनामों से उदयपुर शहर विश्व प्रसिद्ध है। यहां की पिछोला झील की सुंदरता देखते ही बनती है। इस झील के मध्य स्थित जग मंदिर तथा जग निवास तथा इसके किनारे स्थित घाट और हवेलियां इसकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान बनाते हैं। यहां के गणगौर घाट जैसे स्थल परंपरागत उत्सवों और धार्मिक क्रियाकलापों को पर्यटन से जोड़ते हैं। यहां की उदय सागर झील जल संरचना की दृष्टि से ही नहीं बल्कि पर्यटन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इसका निर्माण महाराणा उदय सिंह के काल में हुआ था। इन सभी ऐतिहासिक जल संरचनाओं का वर्तमान पर्यटन में उपयोग, उदयपुर की पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक आर्थिक गतिविधियों के बीच समन्वय स्थापित करता है।

उदयपुर के आसपास के क्षेत्र में अनेक धार्मिक व स्थापत्य स्मारक भी हैं जैसे चावंड। यह महाराणा प्रताप के संघर्ष व मेवाड़ की राजनीतिक परंपरा से संबंधित एक महत्वपूर्ण स्थल है। यहां के राजमहल, चामुंडा माता मंदिर और महाराणा प्रताप की छतरी ऐतिहासिक महत्व रखते हैं। इसी प्रकार गोगुंदा

भी इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यहां पर महाराणा प्रताप का राजतिलक हुआ था। कानोड़ में गोपाल राय तथा मुरलीधर मंदिर, बेदला के परकोटे, महल और धार्मिक स्थल अद्भुत सांस्कृतिक संरचना को प्रदर्शित करते हैं। इसी प्रकार भींडर के महल,परकोटे और मंदिर तथा बाठरडा के ऐतिहासिक गढ़ मेवाड़ के क्षेत्रीय इतिहास को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन स्थलों के कारण यहां का स्थानीय इतिहास भी व्यापक समाज तक पहुंचा है। इस प्रकार पर्यटक ने ऐतिहासिक इमारत को वर्तमान सामाजिक जीवन से जोड़ दिया।

उदयपुर के आधुनिकीकरण में पर्यटन की भूमिका को सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और नगरीय स्तर पर समझा जा सकता है। आर्थिक स्तर पर देखा जाए तो पर्यटन ने आवास, भोजन, परिवहन, हस्तशिल्प, मार्गदर्शन और अन्य सेवाओं के विस्तार को भी प्रोत्साहित किया। इन स्थलों के आसपास विकसित पर्यटन गतिविधियों ने स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न किए। इसी प्रकार सामाजिक स्तर पर पर्यटन के द्वारा लोगों का बाहरी क्षेत्र के लोगों से संपर्क स्थापित हुआ। इसके कारण यहां के खान-पान,सेवा-व्यवहार तथा व्यावसायिक गतिविधियों में परिवर्तन आया। इस प्रकार यहां की स्थानीय संस्कृति पर्यटकों के माध्यम से व्यापक स्तर तक पहुंच गई। सांस्कृतिक स्तर पर भी मेवाड़ी स्थापत्य परंपरा, धार्मिक उत्सवों ने पहचान प्रदान की। तीज,गणगौर जैसे पारंपरिक आयोजन और ऐतिहासिक मंदिर, सांस्कृतिक अनुभव का माध्यम बन गए। इस प्रक्रिया में इन स्थानीय विरासत को संरक्षित व प्रदर्शित करने की आवश्यकता भी पड़ी।इसी प्रकार नगरीय स्तर पर पर्यटन की बढ़ती आवश्यकताओं ने परिवहन, आवास, बाजार तथा नागरिक सुविधाओं में वृद्धि की। इस प्रकार पर्यटन, आधुनिक उदयपुर के भौतिक विस्तार और सेवा आधारित अर्थव्यवस्था के विकास से भी जुड़ गया।

उदयपुर का आधुनिकीकरण अपनी ऐतिहासिक पहचान से अलग होकर नहीं बल्कि उसके साथ-साथ ही हुआ है। यहां के महल, झीले, मंदिर, छतरियां और गढ़, अर्थव्यवस्था में सांस्कृतिक संसाधन की तरह प्रयुक्त होते हैं। अत: उदयपुर का आधुनिकीकरण केवल पश्चिमी या आधुनिक संरचनाओं के विकास की प्रक्रिया नहीं है बल्कि यह तो ऐतिहासिक, आर्थिक व सामाजिक आवश्यकताओं के साथ-साथ नए रूप में जुड़ी हुई प्रक्रिया है।

दूसरी और पर्यटन विकास के कारण कुछ चुनौतियां भी सामने आई है।जैसे ऐतिहासिक स्मारकों पर अत्यधिक पर्यटन दबाव, अतिक्रमण, अनियोजित निर्माण, प्रदूषण तथा रखरखाव की कमी से विरासत को नुकसान पहुंचा है। अत: पर्यटन की उपयोगिता तभी स्थाई हो सकती है जब संरक्षण को प्राथमिकता दी जाए। इन ऐतिहासिक स्मारकों का नियमित वैज्ञानिक संरक्षण किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त एक सीमा से अधिक व्यवसायीकरण से सांस्कृतिक प्रदूषण का खतरा भी उत्पन्न हो सकता है। इसलिए पर्यटन विकास में स्थानीय समुदाय की भागीदारी तथा ऐतिहासिक प्रमाणों पर आधारित प्रस्तुतीकरण नितांत आवश्यक है। प्रत्येक प्रमुख विरासत स्थल का प्रामाणिक इतिहास, स्थापत्य विशेषताएं और सांस्कृतिक महत्व डिजिटल माध्यमों से उपलब्ध कराया जाना चाहिए। इतिहासकारों, पुरातत्व विशेषज्ञों तथा स्थानीय समुदाय की भागीदारी से विरासत पर्यटन की योजनाएं विकसित की जानी चाहिए।

इस प्रकार पर्यटन ने उदयपुर को आधुनिक सेवाओं, रोजगार, बाजार और बाह्य संपर्कों से जोड़ा। वही उदयपुर की ऐतिहासिक विरासत में पर्यटन को सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। यदि भविष्य में पर्यटन विकास को स्थानीय सहभागिता, वैज्ञानिक संरक्षण, सांस्कृतिक प्रामाणिकता के साथ जोड़ा जाए तो उदयपुर का आधुनिकीकरण अधिक संतुलित व सतत रूप प्राप्त कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. व्यास राजेश कुमार. पर्यटन उद्भव एवं विकास. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी 2008.
2. राठौड़ भूपेंद्र सिंह. मध्यकालीन राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थल.
3. प्रतिभा. भारत में पर्यटन उत्पाद एवं सांस्कृतिक ऐतिहासिक विरासत.
4. सिंह दीपक कुमार. भारतीय पर्यटन उद्योग नई संभावनाओं की ओर. योजना. 2001.
5. सिसोदिया अनीता. मेवाड़ की ऐतिहासिक धरोहर का सांस्कृतिक पर्यटन के विकास में योगदान.
6. चंद्र सतीश. मध्यकालीन भारत.
7. वर्मा हरिश्चंद्र. मध्यकालीन भारत. भाग 1.
8. ढोरियाल के.एस. पर्यटन विकास एवं प्रभाव.
9. पंवार ललित के. भारतीय रेगिस्तान में पर्यावरणीय पर्यटन.
10. नेगी जगमोहन. पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धांत.
11. गुप्ता एम.एल. उदयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन. जोधपुर: राजस्थानी ग्रंथागार 2016.
12. ओझा गौरीशंकर हीराचंद. उदयपुर राज्य का इतिहास. भाग 1. अजमेर: वैदिक यंत्रालय.
13. श्यामलदास कविराज. वीर विनोद. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास 1986.
14. व्यास राजशेखर. मेवाड़ की कला व स्थापत्य.
15. जोशी राधेश्याम. राजस्थान दर्शन. भीलवाड़ा: प्राइम पब्लिकेशन 2000.
16. जुगनू श्रीकृष्ण. मेवाड़ का प्रारंभिक इतिहास. उदयपुर: अंकुर प्रकाशन 2009.
17. नीरज जयसिंह, शर्मा बी.एल. राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा. जयपुर: हिंदी ग्रंथ अकादमी 1989.
18. वशिष्ठ नीलिमा. राजस्थान की मूर्तिकला परंपरा. जोधपुर: राजस्थानी ग्रंथागार 2008.
19. Brown Percy. Indian Architecture.
20. राणावत पुष्पेंद्र सिंह. वाह उदयपुर वाह।

****